रविवार, दिनाँक 26-02-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सभी सजनों को जय सीताराम जी।

'कलुकाल जाणा सतवस्तु ने आणा जीवाँ ने सोचदिया रह जाणा पछोताणा'

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों समझदारी इसी में है कि अपने सजन आप बन जाओ। याद रखो जब तक हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार स्वयं में स्वाभाविक परिवर्तन ला श्रेष्ठ मानव नहीं बन जाते तब तक हम सतयुग में प्रवेश करने के योग्य नहीं बन सकते। कहने का आशय यह है कि हमारे जीवन का अन्त परिणाम हमारे भाव-स्वभावों पर टिका हुआ है। इस सन्दर्भ में अगर हमारे भाव-स्वभाव सात्विक व सत्य-धर्म के प्रतीक हैं तो हमारे जीवन का अन्त परिणाम फ़र्स्ट का निकलेगा ही निकलेगा। इसके विपरीत यदि हमारे भाव-स्वभाव नकारात्मक हैं तो हमारे जीवन का दुष्परिणाम निकलेगा जो अपने आप में जन्म-मरण के चक्र-व्यूह में उलझने की बात होगी। इस बात को समझते हुए सजनों अपने जीवन के पथ का आप चयन करो परन्तु साथ ही यह भी याद रखो कि जैसा चयन होगा वैसा ही परिणाम निकलेगा। इस विषय में क्या हम माने कि हम अपने सजन आप बनने के लिए तैयार हैं और इस हेतु अपने भाव-स्वभाव सकारात्मकता में साधने के लिए भी तत्पर हैं? इसी के साथ क्या हम भाव-स्वाभाविक परिवर्तन हेतु जीवन के समस्त सुखों को तुच्छ मानकर उनका सहर्ष त्याग करने के लिए तत्पर है?

यदि आपका उत्तर 'हाँ जी' है तो जान लो - यह अपने जीवन को आप लाभान्वित कर समझदारी से काम लेने की बात है। इसके विपरीत यदि आपका उत्तर इसके प्रति कमज़ोर है तो हम यही कहेंगे कि बार-बार यहाँ आने की परेशानी क्यों उठाते हो? सजनों यह बात खुद भी समझो और अपने बच्चों को भी समझाओ ताकि जीवन में किसी भी प्रकार की कोई परेशानी का सामना न करना पड़े। याद रखो औलाद का दुःख खुद को दुःखी करता है अतः अपने दुःख का कारण आप मत बनो। इस विषय में वही माता-पिता अपने लिए दुःख खरीदते हैं जो अपने बच्चों को परमार्थ से यानि आत्मज्ञान से वंचित रखते हैं। सो यह कदापि न होने देना यानि इसको चेतावनी समझना और अपने सजन आप बन जाना। इस हेतुः-

सजन सदो, सजन सदाओ और सजन ही पहरेवा पाओ।

सजनों यहाँ सजन पहरेवा पाने से तात्पर्य स्वभावों की सन्तोष-धैर्य युक्त इलाही पोशाक पहनने से है। कहने का आशय यह है कि यह समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार अपना व्यावहारिक रूप अपनाने व ढालने की बात है। याद रखो जो ऐसा उत्तम पुरुषार्थ दिखाता है, वही और केवल वही निष्पाप जीवन जीने में समर्थ हो पाता है। उसी का ही परिवार आजीवन प्रसन्नता से चहुं ओर एक सुन्दर माहौल का निर्माण कर सकता है। अतैव इस छोटी सी बात को समझो और अपने पर और अपनी सन्तानों पर आप कृपा करो।

इस सन्दर्भ में हो सकता है कि आपको अपने बच्चों को स्वाभाविक तौर पर बदलने में पहले थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़े क्योंकि अब तक उनका स्वाभाविक रूप मुकम्मल तौर पर स्वार्थपरता वाला बन गया होगा और उनका ख़्याल परम तत्व के साथ जुड़ने के स्थान पर संसार से इस कदर जुड़ गया होगा कि अब उनके जीवन में रोने-झुखने के सिवाय और कुछ नहीं बचा होगा। इस तरह कामनाओं में उलझकर वे इतने कमज़ोर हो गये होंगे कि उनके अन्दर आत्म-विश्वास जैसे ताकतवर गुण लेशमात्र भी नहीं बचे होंगे और वे दूसरों पर आश्रित हो चुके होंगे। इसी वजह से अन्य लोग भिन्न-भिन्न तरीकों से उनका लाभ उठा रहे होंगे और वे अजीब से जीवन को प्राप्त हो चुके होंगे। यहाँ तक कि उनका खाना-पीना, बातचीत का तरीका और व्यावहारिक रूप भी मानवता के विपरीत हो गया होगा जो कि उनके व आपके लिए अनेकानेक दुःखों को प्राप्त करने का कारण बन रहा होगा। सो सजनों इन परेशानियों में उलझकर रूक मत जाना यानि अपने वैरी आप मत बनना क्योंकि यह अज्ञानमय स्थिति को प्राप्त होने की बात होगी। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मुकम्मल तौर पर समभाव-समदृष्टि का सबक़ धारणकर तद्नुरुप अपने भाव-स्वभाव को साध लेना। जानो यही सबसे उत्तम साधना है और जो इस साधना में समर्थ हो जाता है, वह उत्तमता का प्रतीक बन आत्म-स्वरूप में स्थित हो जाता है। अतः यत्न करो, पुरुषार्थ करो और यथार्थतापूर्ण निष्पाप जीवन जीना आरम्भ कर दो ताकि आपका अन्त परिणाम मंगलमय हो और आप परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से भजन सुनोः-

महाबीर जी रहे ने पुकार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।

मिथ्या ए संसार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।।

ए देही तेरी ख़ाक दी ढेरी, निकल गया चमत्कार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिस देही दा अभिमान तूं करनैं, ओ वी ना चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

पंज चोर तेरे अन्दर वसदे, मौत दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।।

जिस धन दा हंकार कितोई, ओ यमां दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या महल ते मिथ्या माड़ियां, चार दिनां दी बहार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिन्हां पिच्छे तूं कूड़ कमत्तो, ओही आसन तैनूं साड़।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

भाई बन्धु तेरे मित्र प्यारे, कोई न चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

हुण वी सम्भल तूं मूर्ख बन्दिया, जन्म अपना संवार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या संसार दी प्रीति नूं छोड़ के, आओ महाबीर जी दे द्वार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

नाम ध्यावो भैणां उस बली दा, यमां तो लैसन छुड़ा।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

महाबीर जी दे चरणां विच 'प्रीति' बढ़ाओ, रघुनाथ जी नूं देसन मिला।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

दासी ऐही अरज़ां करदी, सुध लवो भैणां सच्चे घर दी।

महाबीर जी अगूं करो नमस्कार, महाबीर जी अगूं करो नमस्कार।।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।

इस भजन को सुनकर सजनों आपको समझ आ गई होगी कि आपका ख़्याल-ध्यान हर क्षण किस तरफ रहना चाहिए ताकि आप हर समय ज्ञानमय अवस्था में रह सको। इस सन्दर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी कह रहे हैं कि हे कलुकालवासियो ! आपको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी पुकार-पुकार कर आवाहन दे रहे हैं कि संसार की तरफ से अपना मानसिक झुकाव हटाकर वास्तविकता के संग जोड़ो ताकि आप निपुण इन्सान बन जीवन विजयी हो सको। यहाँ याद रखो कि जो बुरे भाव-स्वभाव यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आपके मन में बस गये हैं, ये आपके जीवन की बहुत बड़ी भूल है और आत्म-हत्या करने के समान है। अतः शास्त्र विहित विचारों अनुसार यानि समता का प्रतीक बनकर इन विकारों को अपने मन से बाहर निकाल फैंको। याद रखो जहाँ समता है वहाँ किसी प्रकार की कोई मोह-ममता नहीं। जहाँ समता है वहाँ ख़्याल सर्व एकात्मा के दर्शन में स्थित रहते हुए समस्त जीवों को एकरूप मानता है। ऐसा होने पर भटकने की कोई गुंजाईश नहीं रहती क्योंकि तब मन में किसी के प्रति कोई वैर-विरोध नहीं पनपता। इस तरह सहज और सरलता से सजन भाव पर स्थिर बने रह आप एकता के प्रतीक बन जाते हो। अब जहाँ एकता होती है वहाँ सजन संगठित शक्ति के कारण शक्तिमान हो जाता है क्योंकि तब घर परिवार और समाज का हर सजन एकरस भाव-स्वभाव अपनाकर एकजुटता से जीवन के विजय-पथ पर

आगे बढ़ते हुए अपने सच्चे घर पहुँचने में सफल हो जाता है। इस बात को ध्यान से समझो और इसके विपरीत चलन अपनाकर अपने वैरी आप मत बनो। यकीन मानो हमारा जीवन आनन्दमय है अतः उसी आनन्द का अनुभव करते हुए व अपने समस्त जीवन कर्त्तव्य समयबद्ध समझदारी से पूर्ण करते हुए असीम यश कीर्ति को प्राप्त करो। इस सन्दर्भ में विचार करो कि जो भी दिनचर्या आप करते हो, वह हर सोच, हर बात, हर कर्म क्या यश-कीर्ति का प्रतीक होता है? इस प्रकार अपनी सोच, अपनी बातचीत व कर्म के रूप को ध्यान से देखने पर आपको अपने जीवन का अन्त परिणाम (सकारात्मक या नकारात्मक) दृष्टिगोचर हो जाएगा। इस परिणाम के सकारात्मक होने पर आपका आत्म-विश्वास बढ़ेगा और आप अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ एकजुट होकर परमार्थ के रास्ते पर प्रशस्त होने में कामयाब हो जाओगे।

इस सन्दर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अपने जीवन कर्त्तव्यों को समझो और जानो कि मुझे व मेरे परिवार को यह 'द्वारा' क्योंकर मिला और कुदरत की मेहरबानी से मैं इसके साथ कैसे जुड़ गया? इस बात का उत्तर लेने के पश्चात जानो कि अपने जीवन के फ़र्ज अदा को समझदारी से करने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित परमार्थी ज्ञान की स्पष्टतया जानकारी होना अनिवार्य है। इस जानकारी को व्यवहार में उतारकर अपनी यादगीरी में ले लेना है ताकि इसे आगे बताने के काबिल बन जाओ। जानो ऐसा करने से आपका परिवार तो अच्छा बनेगा ही बनेगा, साथ ही औरों तक भी यह सतवस्तु का सन्देश पहुँचा कर आप परोपकारी बनने में कामयाब हो जाओगे। यहाँ यह भी याद रखो कि जो इन्सान अपने बच्चों को परोपकार प्रवृत्ति में नहीं ढालता, वह इन्सान कहलाने के काबिल ही नहीं होता। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते आपने ऐसा नहीं करना। इस बात को गहराई से समझना है और अपने जीवन का अच्छा परिणाम प्राप्त करना सुनिश्चित करना है। अब आगे कीर्तन सुनोः

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।

एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।।

जन्म दी बाजी जित चाहे हार, फिर जीत हार है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

कुदरत ने तैनुं इन्सान बनाया, इस जगत ते तां तूं आया उस ईश्वर दी है करामत।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

माता सजन जी दे गर्भ विच आया, उस ईश्वर ने तेरा अंग अंग सजाया।

सूरज चांद दा डिट्ठा प्रकाश, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै।

उस ईश्वर दा सिमरन करके, एहो धन दौलत चलेगा साथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

खबरदार अकल ते राहवीं, बुरा संग कर अकल अपनी न गवावीं।

अकल न कर बरबाद, अकल कर लै तू आज़ाद।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकल है सारा जगजीत मीतां दी ओ है ओ मीत अकल अपनी टिकाणे ला।

फिर तूं उस ईश्वर नूं पा, फिर जीत जीत है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकलवान ते ईश्वर रैहंदे प्रसन्न, अकल इन्सान नूं करदी है दंग।

अकल वेदों में है विदित, अकल वेदों में है अस्थित।

अकल है तुम्हारे पास, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

शब्द:-

सजनों जे दुनियां वल्लों मुख मोड़ लिया, फिर दुनियां वल मुख करना क्यों।

ऐह दुनियां है जे मुसाफिरख़ाना इस दुनियां वल फिर मुख फेरना क्यों।।

(श्री साजन जी दे मुख दी शाख)

(सुनो मेरे सजनों ईश्वर तुहानुं की कैहंदे हिन)

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।

अपनी अक्ल दे नाल कुल दुनियां नूं जगाओ, कुल दुनियां नूं जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दे नाल, दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दा है प्रकाश, परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ

परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अभी जो कीर्तन आपने सुना इसमें कमाल का सन्देश है। इस सन्देश को अमल में लाने से यकदम आपकी बुद्धि पलटा खा सकती है। इस हेतु मन में प्रभु के प्रति चाहत का होना अनिवार्य है। आशय यह है कि जब तक आप स्वयं नहीं चाहते कि हम बुद्धिमान या अक्लमन्द बने, तब तक कोई दूसरा कुछ नहीं कर सकता। जीवन में कुछ भी परिवर्तन लाने की खातिर मेहनत तो खुद ही करनी पड़ती है और उस मेहनत के लिए नियमबद्ध समय भी खुद ही देना पड़ता है अन्यथा काम नहीं बनता। इस बात को समझते हुए सजनों खुद मेहनत करो और प्रभु की तरफ बढ़ो। इस सन्दर्भ में ईश्वर कहते हैं कि एक बार अपने ख़्याल को मुझ संग ध्यान-स्थित कर विशुद्धता से प्रार्थना करके तो देखो। ऐसा करने से अब तक जीवन में जितने भी अक्लहीनता के प्रतीक कुकर्म, अधर्म किए हैं, उन सबकी माफी हो जाएगी। शर्त मात्र इतनी ही है कि आपकी प्रार्थना में सत्यता होनी चाहिए और आप हक़ीकत में प्रभु का हुक्म मानकर अपने भाव-स्वभाव तबदील करने के लिए तैयार हों। तो क्या यह मन्जूर है?

'हाँ जी'।

तो जानो प्रभु का हुक्म मानोगे तो ही अक्लमन्द नाम कहाओगे और धीरे-धीरे परिपूर्णता में आने पर आपकी अक्ल ठिकाने आ जाएगी। फिर आप किसी के वश में आकर जीवन की किसी भी मर्यादा को भंग नहीं करोगे और ए विध् मर्यादित जीवन जीना आरम्भ कर दोगे। इस सन्दर्भ में ईश्वर कहते हैं कि हे मानव ! इस संसार में जितने भी जीव हैं उन सब में से सबसे अधिक अक्ल आपके पास है अतः सब जीवों से अपने आप को उत्तम मानो। इस उत्तमता में सधे रहने पर ही आपकी विशेष पहचान बनेगी और आप आनन्द अवस्था को प्राप्त कर सकोगे। हम भूले भटके इन्सानों को ईश्वर फिर कहते हैं कि यदि अपनी श्रेष्ठता को पुनः प्राप्त कर बलवान बनना चाहते हो तो जानो कि सृष्टि रचना के साथ ही कुदरती आये वेदों में अक्ल स्थित है अतः इस वेदवाणी को अमल में लाओ और मन-वचन-कर्म द्वारा अपनी यथार्थ अवस्था में सधे रहते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाओ। जानो जैसे ही युगों के व्यतीत होने के साथ-साथ इस कुदरती ज्ञान के प्रति दुनियाँ के इन्सान अपरिचित होते चले गये व अनेक प्रकार के ज्ञानों में उलझ गये, वैसे ही उनकी बुद्धि पर संकल्प कुसंगी का रंग चढ़ गया और वे अपनी वास्तविकता से दूर हो अपनी पहचान खो बैठे। पर चूंकि अब सत्य के प्रतीक युग का शुभारम्भ हो चुका है, इसीलिए अब सत्यज्ञान को धारण करने का सही समय आ गया है। इस समय को समझो और समय के साथ आगे बढ़ने के लिए हिम्मत दिखाओ व अपने सजन आप बन जाओ। इस तरह जीवन के अर्थ को सिद्ध कर लो।

जान लो कि जीवन अर्थ को सिद्ध करने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में हमारे पास सतवस्तु का ज्ञान है। यह ज्ञान हमारे हृदय को सत्य से इस कद्र प्रकाशित कर देता है कि फिर उस प्रकाश के तेज के आगे कोई नहीं टिक पाता। इस तरह हम इन्सान पुनः अपनी यथार्थ ज्ञानमय अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं और हमारे जीवन का काम बन जाता है। यह है सजनों अक्लमन्द बनने का तरीका। जानो अक्लमन्द इन्सान ही बर्बादी से आबादी की ओर बढ़ पाता है और उसी का ख़्याल अपने सच्चे घर में ध्यान स्थित हो आबाद हो पाता है। यहाँ जानो कि जो आनन्द अपने घर में है वह कहीं और नहीं। जिस भी इन्सान को इस आनन्द के मंगलाचार का अनुभव हो जाता है उसको फिर इस संसार का सब कुछ तुच्छ लगने लगता है क्योंकि उसके मन को सन्तोष प्राप्त हो जाता है। सन्तोष रूपी अमोलक धन के प्राप्त होने पर 'काम' मन में जाग्रत नहीं होता। 'काम' नहीं होता तो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार उत्पन्न नहीं होते। इस तरह मन इन विकारों के अभाव में शान्त रहता है। अब जहाँ शान्ति होती है वहाँ प्रसन्नता होती है, एकाग्रचित्तता होती है और इसी वजह से इन्सान अपने स्वरूप में स्थित रह पाता है और निष्कामता से परोपकार के निमित्त अपना जीवन समर्पित कर पाता है। कहने का आशय यह है कि जहाँ सन्तोष होता है वहाँ इन्सान आत्मतुष्ट हो जाता है क्योंकि उसके मन में इच्छा उत्पन्न नहीं होती। इस तरह उसे अपने यथार्थ स्वरूप का साक्षात्कार हो जाता है और यह सत्यज्ञान हो जाता है कि मैं वही हूँ, जो वह है। ऐसा होने पर 'तूँ-मैं' का फ़र्क समाप्त हो जाता है और वह एकरूप/समरूप हो जाता है। हमें समझ नहीं आती कि इस सन्दर्भ में दिक्कत कहाँ है? हमारे पास आद् ज्ञान है जो कि बड़े सहज और सरल तरीके से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित है। अब अगर सब कुछ पास होते हुए भी हम अपने आप को उस ज्ञान से वंचित रखते हैं और थोड़ा सा पुरुषार्थ करने में सकुचाते हैं तो यह बड़े ही शर्म की बात है। इस सन्दर्भ में देखते हैं कि आज का इन्सान हर वही काम करता है जो शर्मसार करने वाले होते हैं यानि उसकी सोच, उसकी बात इन्सानियत के विपरीत होती है। अब आगे से ऐसा न हो इस हेतु सजनों जो कीर्तन अभी सुना है, उसके एक-एक शब्द को जीवन-उत्थान हेतु ध्यान से पढ़ो व समझो। जानो जो भी ऐसा करेगा वह सहजता से स्वार्थ से परमार्थ बन जाएगा परन्तु करना तो आपको खुद ही पड़ेगा अन्यथा तो कलुकाल के साथ रगड़े जाओगे। फिर मत कहना कि किसी ने हमें समझाया ही नहीं। यहाँ याद रखो कि जब तक आत्मिकज्ञान प्राप्त नहीं करते तब तक कुछ भी नहीं हो सकता। यह आत्मिकज्ञान आप भी प्राप्त करो और बाल्यावस्था से ही अपने बच्चों को भी प्रदान करो ताकि वे इसके वर्त-वर्ताव में निपुण बने और अपना जीवन सकार्थ करें। जानो जो माता-पिता ऐसा नहीं करते यानि अपने बच्चों के अन्दर निहित आत्मज्ञान का विकास नहीं करते व तद्नुकूल आचार-व्यवहार उनके सम्मुख प्रदर्शित नहीं करते उनके बच्चे नकारात्मकता के वातावरण से प्रभावित हो तद्नुकूल ढल जाते हैं। जानो सजनों, यह उन नवजातों के प्रति जो जन्म-जन्मान्तरों के बाद आशा लेकर जीवन बनाने हेतु आपके पास आते हैं, घोर अपराध होता है। यह अपराध हमारे द्वारा इसलिए होता है क्योंकि हमारे माता-पिताओं ने भी हमारे प्रति अपना यह कर्त्तव्य ठीक से नहीं निभाया। अब जो उन्होंने किया वही हम कर रहे हैं। परन्तु अब आप सब नव-दम्पतियों के पास तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है जो सही तरीके से आत्मिक ज्ञान अनुसार बच्चों की पालना करने की जानकारी दे रहा है। अतः खुद को व अपने बच्चों को आरम्भ से ही सद्मार्ग पर लाने हेतु इसमें वर्णित ज्ञान का उचित ढंग से प्रयोग करो। ऐसा करने से आपके परिवार का एक-एक सदस्य सुन्दरता व समता का प्रतीक बन जाएगा और आपका जीवन आबाद हो जाएगा।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपना फ़र्ज अदा हँसकर करो और बाहर से अपना ख़्याल हटाकर अन्तर्मन में केन्द्रित करो। इस हेतु सभी दम्पती, जिनके बच्चे अभी पैदा हुए हैं या होने वाले हैं, वे सब शुरु से ही मेहनत करो और शास्त्र-विहित नीति-रीति अनुसार अपने बच्चों की पालना करो। तभी ये बच्चे बड़े होकर आपके लिए, आपके परिवार के लिए व कुल समाज के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे क्योंकि आत्मिकज्ञान के प्रभाव से इनकी बुद्धि टिकाणे रहेगी और उसका लाभ सब तक पहुँचेगा। आशय यह है कि आपके बच्चे भ्रमित बुद्धि इन्सान न बने, उसके लिए आरम्भ से ही उन्हें आत्मिकज्ञान प्रदान करो और तद्नुरूप ही उनके आगे प्रदर्शन करो ताकि आपको सन्तान के रूप में जो खुशी प्राप्त हुई है, वह आजीवन बनी रहे। अब ऐसा ही करना। इस हेतु मिलकर बोलोः-

ठान लिया तो रुकना क्या

हम आगे बढ़ेंगे हम आगे बढ़ेंगे

और आगे बढ़ कर

श्रेष्ठ मानव बन जाएंगे

भौतिक ज्ञान के संग संग

आत्मिक ज्ञान भी प्राप्त करेंगे

जो शब्द विचार निहित हैं उसमें

उनको धारण कर नेक बनेंगे

ए विध् जो अंधकार है मन में

वह स्वतः ही मिट जाएगा

सद्ज्ञान की वर्षा होने पर

मन का मैल धुल जाएगा

फिर न कोई विषय रहेगा

जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करेंगी

तो ही तो भोग विलास की पीड़ा

हमें नहीं सहनी पड़ेगी

तभी तो दोष मुक्त हम रहकर

विकार रहित रह पाएंगे

निर्विकारी नाम कहा कर

जीवन सफल बनाएंगे

आप ऐसा करने में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित।